संवत्सर – वर्ष की वैज्ञानिकता

प्रो. कैलाश चतुर्वेदी
पूर्व निदेशक, संस्कृत शिक्षा विभाग
जयपुर, राजस्थान

सारा विश्व आज ग्रेगेरियन कैलेंडर के अनुसार 'अंग्रेजी वर्ष (जनवरी -दिसंबर) को मान रहा है, जो मानवीय अवधारणा पर आधारित है, जबकि इससे 57 वर्ष पुराना 'विक्रम-सम्वत्' पूर्णतः सृष्टि -रचना वैज्ञानिक आधार पर निर्मित है. कैसे? समझिये ! अदृश्य -परमात्मा ने स्वेच्छा से सृष्टि -निर्माण हेतु 'यजन' किया , जिसके दो मूल तत्त्व थे- यत् + जू (सोम + अग्नि), जो उसके द्वारा रचित प्रकृति के गर्भ में सदैव विद्यमान रहते हैं, इसीलिए कहा गया है- 'अग्नीषोमात्मकं -जगत्'। इसे ही प्रकारांतर से परब्रह्म का अन्तर्याम एवं बहिर्याम (स्वर्लोक एवं सृष्टि) भी कहा जाता है। परमात्मा का स्वलोक और उसके द्वारा निर्मित पंचपर्वा सृष्टि सभी वर्तुलाकार है-इसलिए स्वयंभू-परमेष्ठी-सूर्य-पृथ्वी -चन्द्रमा सभी गोल हैं। अपने अदृश्यमान लोक के तीन चौथाई भाग में उसका निजी साम्राज्य है और एक-चौथाई में उसने सारे सृष्टि-प्रपंच को रचा है। जैसा कि ऋग्वेद के मंत्रो से स्पष्ट है-

'पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यं,
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायॉश्च पूरुषः ,
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि[1]**।।**

लगभग 2080 वर्ष पूर्व सृष्टि-रचना की इसी अवधारणा के आधार पर 'भारतीय संवत्सर' का निर्धारण चक्रवर्ती सम्राट् भोज की सभा के 'विद्वान् -ज्योतिषियों' ने किया। उन्होंने पाया कि प्रकृति में सोम की अग्नि में आहुति का चार अवस्थाओं में परिपाक होता है और उसके बाद नव-सृष्टि का निर्माण होता है। प्रथम परिपाक जिस समय दृष्टिगत हुआ, वहीं से उन्होंने नव-सम्वत्सर का प्रारम्भ माना[2], और पदार्थों का चैतन्य मान कर 'चैत्र' नाम से सम्वत्सर

का प्रारम्भ निर्धारित किया, आज भी हम देखते हैं, कि अधिकाँश फलों-पुष्पों का परिपाक चैत्र मास में ही पाया जाता है (यही हमारी वसंत ऋतु है। द्वितीयावस्था वह आती है, जब सोम का अग्नि में पूर्ण रूप से पाक हो जाता है, तब अग्नि का रूप तेज़ होने के कारण वह दाहक बन जाती है, यही ग्रीष्मावस्था है। ज्यों -ज्यों पूर्ण-परिपाक होने पर अग्नि-सोम शीतलता और तरलता की ओर बढ़ते हैं,वर्षा का प्रवेश हो जाता है और अंत में संवत्सराग्नि शांत होकर शीतल बन जाती है, बस यही हमारी शीत ऋतु है। वर्तुलाकार होने से सारा संवत्सर 360 अंशों में बँटा है, इसलिए 'अग्नीषोमात्मक -संवत्सर भी 360 दिन का ही गिना गया है[3]।

मेरे प्रिय 110 करोड़ हिन्दू भाई-बहिनो ! इसलिए अपनी बिसरायी हुई निधि को पहचानो। यह कैसी विडंबना है कि गुड़ खाते हो (जन्म-परन-मरण - विवाहादि षोडश-संस्कार सब तिथि/माह और ज्योतिषी की सलाह के अनुसार करते हो) और गुढाणी (अपने सम्वत्) से परहेज ?

जागिये,और पूरे उत्साह के साथ नव संवत्सर 2079 का स्वागत करते हुए चैत्र-नवरात्र में शक्ति-प्रदायिनी माँ-दुर्गा का घर-घर आवाहन कीजिये।

हे परमात्मन्! आप भी इस नवसम्वत् 2079 में श्रांत-भ्रांत-क्लांत 110 करोड़ हिन्दुओं को भक्ति- शक्ति-सम्पन्नता से परिपूर्ण कीजिये।

सन्दर्भ :

1. ऋग्वेद - 10/90/2, 3
2. ज्योतिश्चक्रम् (पं. मधुसूदन ओझा)
3. ज्योतिषवेदांग - एक अनुशीलन / पृ. 11